प्रातः सभा 23-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः मीठे-मीठे बच्चे कब सम्मुख हैं और कभी दूर चले जाते हैं। सम्मुख फिर वही रहते हैं जो याद करते हैं। क्योंकि याद की यात्रा में ही सभी कुछ समाया हुआ है। गाया जाता है नज़र से निहाल ..आत्मा की नज़र जाती है परमपिता में। और कुछ भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होते हैं। तो अपने ऊपर कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। याद न करने से माया समझ जाती है इनका अभी योग टूटा हुआ है तो वह अपने तरफ खींचती है। कुछ न कुछ उल्टा काम करा देती है। तो जैसे कि बाप की निंदा कराते हैं। भक्ति मार्ग में गाते हैं बाबा मेरा एक दूसरा न कोई। तब बाप कहते हैं बच्चे मंजिल बहुत ऊंची है। काम करते हुये बाप को याद करना यह है ऊंच ते ऊंच मंजिल। इसमें प्रैक्टीस बहुत अच्छी चाहिए। नहीं तो निन्दक बन जाते हैं। उल्टा काम करने लगते हैं। समझो कोई क्रोध में आकर आपस में लड़ते-झगड़ते हैं तो यह निन्दा कराई ना। इसमें बड़ी खबरदारी रखनी है। अपने गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये, बुधि एक बाप से लगाना है। ऐसे नहीं कि कोई सम्पूर्ण हो गया है। नहीं। कोशिश ऐसी करनी चाहिए हम देही अभिमानी बनें। देह-अभिमान में आने से कुछ न कुछ उल्टा काम करते हैं, गोया बाप की निंदा कराते हैं। बाप कहते हैं सद्गुरु की निंदा कराने वाले ल0ना0 बनने के ठौर पा न सकें। अभी से ही पूरा पुरुषार्थ करते रहो। इससे तुम बहुत ही शीतल बन जावेंगे। 5 विकारों की सभी बातें निकल जावेंगी। बाप से बहुत ही ताकत मिल जावेंगी। काम-काज भी करना है। बाप ऐसे नहीं कहते कि कर्म न करो। वहां तो तुम्हारा कर्म अकर्म हो जावेगा। कलियुग में जो कर्म होते हैं वह विकर्म हो जाते हैं। अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर तुमको सीखना होता है। वहां सीखने की बात ही नहीं। यहां के सीखावट ही वहां साथ चलेंगे। बाप बच्चों को समझाते हैं बाहरमुखता अच्छी नहीं है। अन्तर्मुख-भव। वह भी समय आवेगा जब कि तुम बच्चे अन्तर्मुख हो जावेंगे। सिवाय बाप के और कुछ याद नहीं आवेगा। तुम आये भी ऐसे हो। कोई की याद नहीं थी। गर्भ से जब बाहर निकले तब पता पड़ा है यह हमारा मां-बाप है। यह फ्लाना है। तो फिर अब जाना भी ऐसे ही है। हम एक बाप के हैं। उनके सिवाय और कोई की भी याद बुधि में न आये। भल टाईम पड़ा है परन्तु पुरुषार्थ तो पूरी रीति करनी है ना। शरीर पर तो भरोसा नहीं है। कोशिश करते रहना चाहिए। घर में भी बहुत शांत हो। कलेश नहीं। नहीं तो सभी कहेंगे इनमें कितनी अशांति है। तुम बच्चों को तो रहना है बिल्कुल शांत में। तुम शान्ति का वरसा ले रहे हो ना। अभी तुम रहते हो कांटों के बीच में। फूलों के बीच में नहीं हो। कांटों के बीच में रहते हुये फूल बनना है, कांटों के साथ कांटा नहीं बनना है। जितना तुम बाप को याद करेंगे उतना ही शांत रहेंगे। कोई उल्टा-सुल्टा बोले तुम शांत में रहो। आत्मा है ही शांत। आत्मा अपने स्वधर्म में है। तुम जानते हो हमको अभी अपने उस घर में जाना है। बाप भी है शांत का घर। कहते हैं तुमको भी शांति का घर बनना है। वाह्यात झरमुई झंगमुई बहुत ही नुकसान कर देते हैं। बाप डायरेक्शन देते हैं ऐसी बातें न करनी चाहिए। इससे तुम बाप की निंदा कराते हो। शांति में कोई निंदा वा विकर्म होता ही नहीं। बाप को याद करते रहने से और ही विकर्म विनाश होंगे। अशांत न खुद न औरों को करे। किसको दुःख देने से आत्मा नाराज होती है। बहुत हैं जो रिपोर्ट लिखते हैं। बाबा यह घर में आते हैं तो बहुत धमचक्कर मचा देते हैं। बाबा लिखते हैं तुम अपने शांत में रहो। हातमताई की कहानी भी है ना। उनको कहा तुम मुख में मुहलरा डाल दो तो आवाज निकलेगा नहीं। बोल नहीं सकेंगे। तुम बच्चों को भी शांति में रहना है। मनुष्य शांति के बहुत ही धक्के खाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारा मीठा बाबा शान्ति का सागर है। शांति कराये2 विश्व में शान्ति की स्थापना कर देते हैं। अपने भविष्य मर्तबे को भी याद करो। वहां होता ही है एक धर्म। दूसरा कोई धर्म ही नहीं। इसको ही विश्व में शांति कहा जाता है। जिसको हैविन कहा जाता है। फिर जब दूसरे दूसरे धर्म आते हैं तो हंगामे हो जाते हैं। अभी कितनी अशांति है। तुम बाप का वरसा सारे विश्व का राज्य लेते हो। तो वहां ऐ धर्म होने कारण कितनी शांति रहती है। समझते हो हमारा घर वह है। हमारा स्वधर्म है शांत

ऐसे तो नहीं कहेंगे शरीर का स्वधर्म शांत है। शरीर तो विनाशी चीज़ है। आत्मा अविनाशी चीज़ है। जितना समय आत्माएं वहां रहती हैं कितना शांत रहती है। यहां तो सारी दुनिया में अशांति है। इसलिए शांति2 मांगते रहते हैं। परन्तु कोई चाहे सदैव शांत में रहे। यह तो हो न सके। भल 63 जन्म वहां रहे फिर आना जरूर पड़ेगा। अपना सुख-दुःख का पार्ट बजाकर चले जावेंगे। ड्रामा को अच्छीरीतध्यान में रखना होता है। तुम बच्चों को यह ध्यान में रखना बाबा हमकोदो वरदान देते हैं, सुख और शांति का। इनकीआत्मा भी बैठसुनती है। सबसे नजदीक इनके कान सुनते हैं। इनका कान मुख के नजदीक है। तुम्हारा फिर भी इतना दूर है। इनका तो मुख कान बिल्कुल नजदीक है। झट सुन लेते हैं। सभी बातें समझ सकते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों मीठे2 तो सभी को कहते हैं क्योंकि बच्चे हैं ना। तुम भी जानते हो जो भी जीवात्माएं हैं वह सभी बाप के बच्चे अविनाशी हैं। शरीर तो विनाशी है। बाप अविनाशी तो बच्चे भी अविनाशी हैं। बाप बच्चों से ही वार्तालाप करते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी नालेज। सुप्रीम रूह बैठरूहों को समझाते हैं। बाप का प्यार तो है ही। जो भी सभी रूह हैं। भल तमोप्रधान हैं। जानते हैं यह सभी जब घर थे तो सतोप्रधान थे। सभी को कल्प2 हम आकर शांति का रास्ता बताते हैं। वर देने की बात ही नहीं। ऐसे नहींकहते धनवान भव। आयुष्मान भव। नहीं। सतयुग में तुम थे परन्तु आर्शीबाद नहीं देते हैं। कृपा वा आर्शीबाद नहीं मांगनी है। बाप बाप भी है टीचर भी है। यह ही बात याद रखनी है। ओ ओ शिव बाबाबाप भी है टीचर भी है। ज्ञान का सागर भी है। बाप ही बैठ अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ सुनाते हैं जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। यह सारा आलराउन्ड चक्र है ना। बाप समझाते है इस समय सारी दुनिया इस रावण राज्य में है। रावण सिर्फ लंका में नहीं था, यह है बेहद की लंका। चारों तरफ पानी है। सारी लंका रावण की थी। अभी राम की बननीहै। लंका तो सोने की थी। सोना बहुत होता है। एक मिसाल भी बताते हैं ध्यान में गया वहां सोने की ईंटें देखी। जैसे यहां मिट्टी के वहां सोने के होंगे। तो ख्याल किया सोना ले जावें। कैसे नाटक बेठ बनाई है। भारत तो नामी ग्रामी है। और खण्डों में इतना सोना, हीरे जवाहर नहीं होते हैं। भारत की ही भारी महिमा है। बाप कहते हैं मैं आकर सभी की सदगति करता हूं। सभी को वापसले जाता हूं। बाप आये ही हैं गाईड-नेस करने। चलो बच्चे अभी घर जाने का है। आत्माएं सभी पतित हैं। पावन होने बिगर वापस जा नहीं सकते हैं। पतित को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। इसलिए सभी यहां ही हैं। वापस कोई भी जा नहीं सकते हैं। ला नहीं कहता। यह जो कहते हैं फलाना ज्योति ज्योत समाया। स्वर्ग पधारा। यह सभी गपोड़े हैं। यह नाटक अविनाशी बना हुआ है। इनकी अन्त कब आती नहीं है। बाप समझाते हैं तुम कल हमारे पास राजयोग पढ़ रहे थे। भगवान राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाते हैं। यह बातें और कोई समझ नहीं सकते है।

बाप समझाते हैंतुम 63 जन्म गटर में पड़े थे। उसमें तुमको बड़ा सुख आता था। बाहर निकलने दिल नहीं होती थी। घड़ी2 याद आता। देखने से ही कहते फिर अभी जाऊं। न देखने से भी बुधि में उस तरफ जाती है। बाप कहते हैं माया और ही जोर से याद दिलावेगी। तुमको खबरदार रहना है। इस पर युध है। आंखें बड़ा धोखा देती हैं। देखने से ही एकदम रफू चक्र हो जाते हैं। इन आंखों को कबजे में रखना है। देखा गया भाई बहन में भी दृष्टि ठीक नहीं रहती है। तो अभी समझाया जाता है भाई2 समझो। यह तो सभी कहते हैं भाई2 हैं। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। जैसे भेढक हैं। टूं2 करते रहते हैं। अर्थ कुछ नहीं। अभी तो तुम हरेक बाप का यर्थात अर्थ समझ गये हो। बाप मीठे2 बच्चों को बैठ समझाते हैं तुम भक्ति मार्ग में भी आशुक थे। माशुक को याद करते थे। हाय राम। हे भगवान रहम करो। कहते थे ना। स्वर्ग में तो ऐसे कब नहीं कहेंगे। वहां रावण राज्य ही नहीं होता। तुमको रामराज्य में ले जाते हैं। तो उनकीश्रीमत पर चलना चाहिए ना। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। फिर मिलेगीदेवीमत। इस कल्याण कारी संगम युग को कोई नहीं जानते हैं। क्योंकि सभी को बताया हुआ है कलियुग अजनछोटा बच्चा है। बहुत लाखों वर्ष पड़े हैं। बाप कहते हैं यह सभी भक्ति मार्ग के घोर अंधियारा है। ज्ञान है सोनेरा। भक्ति मार्ग में बहुत धक्का खाते हैं भगवान को पाने लिए।

बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चों वह सभी भक्ति मार्ग है। ड्रामा अनुसार इनकी भीनुंध है। यह फिर भी होगा। अभी तुम समझते हो भगवान मिल गया तो फिर भटकने की दरकार नहीं रहती। तुम कहते हो हम जाते हैं शिव बाबा पास अथवाबापदादा पास। इन बातों को मनुष्य तो सम.. न सके। तुम्हारे में भी जिनको पूरा निश्चय नहीं बैठता तो माया एकदम हप कर लेती है। एकदम जैसे गज को ग्राह हप कर लेती हैं। आश्चर्यवत कथन्तीसुन= सुनन्ती भागन्ती ... पूराने जो चले गये हैंउनका भी यह गायन है। अच्छे2 महारथियों को भी माया हरा देती है। बाबा को लिखते हैं बाबा आप अपने माया को नहीं भेजो। अरे यह हमारी थोड़ेही हैं। रावण अपना राज्य करते हैं। हम अपना राज्य स्थापन करते हैं। यह परमपरा से चला आता है। रावण ही तुम्हारा सब से पुराना दुश्मन है। जानते है रावण दुश्मन है इसलिए हर वर्ष जलाते हैं। बहुत वहां जाते हैं जब किरावण को जलाते हैं। मैसुर में तो बहुत मनाते है। समझ कुछ भी नहीं है। अभी बन्दरों कीसेना कब बन सकती है क्या। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्ति सेना। उन्हों ने फिर नाम बन्दर सेना डाल दी है। तुम समझते हो बरोबरहम बन्दर थे। अभी शिवबाबा से हम शक्ति लेते हैं रावण पर जीत पाने लिए। बाप ही आकर कर के राजयोग सिखलाते हैं। इस पर कथाएं भी अनेक बना दी है। अमरकथा भी कहते हैं। तुम जानते हो बाबा अमरकथा हमको सुना रहे हैं। बाकी कोई पहाड़ों आद पर नहीं सुनाते हैं। न शंकर सुनाते हैं। कहते हैं शंकरने पार्वती को अमरकथा सुनाई। चित्र रखते हैं शिव का। और शंकर पार्वती का भी बनाते हैं। शिव-शंकर मिला देते। यह सभी है भक्ति मार्ग। तुमको अभी भक्ति का नाम नहीं सुन= सुनना है। ऐसे नहीं कि कान बन्द करना है। नहीं। समझाना है कि यह शास्त्र आद सभी हैं मनुष्यमत। गीता-रामायण आद छपते रहते हैं। पहले तो हाथ से लिखते थे। छापे का अक्षर छोटा होता है। ग्रन्थ हाथ का लिखा हुआ इतना छोटा था। फिर बड़ा बना दिया है। दिन प्रति दिन सभी तमोप्रधानझूठे होते गये हैं। सतोप्रधान से सतो होते हैं तोदो कला कम होती है। त्रेताको भी वास्तव में स्वर्ग नहीं कहा जाता। तुम बच्चों को बाप आते हैं स्वर्गवासी बनाने। बाबा जानते हैं ब्राहमण कुल, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी कुल तीनों की स्थापना होती है। रामचन्द्र ने जीत नहीं पाई इसलिएउनको स्त्री क्षत्री की निशानीदे दी है। तुम सभी क्षत्री हो ना। जो माया पर जीत पाते हो। कम मार्कस से पास होने वालेको चन्द्रवंशी कहा जाताहै। इसलिए राम को वाण आददे दिया है। हिंसा तो त्रेता में होती नहीं। गायन ही है राम राजा रामप्रजा .. परन्तु यह क्षत्रीपने की निशानी दे दी है। तो मनुष्य समझते हैंवहां हथियार आद होते हैं। बाप बैठसमझाते हैं यह वाण आद क्यों दिखाया है। शक्तियों को भी कटारी आद दिखाते हैं। राम-सीता के लिए तो क्या2 बैठ शास्त्रों में दिखाया है। कोई सेन्सीबुल ऐसी बात सुने तोकहे यह तो बिल्कुल फाल्तु बातें हैं। और धर्म वाले ऐसी2 बातें सुनाकर अपने धर्म मेंले गये हैं। एक ही गीता शास्त्र है जिसको एकदम खण्डन कर दिया है। पहला नम्बर है ही गीता। सभी धर्म वाले गीता का प्रचार करते हैं। तो यह सभी बातें बाप बैठसमझाते हैं। अपना भी परिचय देते हैं। रचना के आदि मध्य अन्त का भी परिचय देते हैं। तुम अच्छी रीत जान गये हो। बाप ज्ञान का सागर है। इसलिए बाप ही आकर आदि मध्य अन्त का राज बताते हैं। बेहद के बाप की बेहद के बच्चों पर लव है। जो हद के बाप का हो न सके। 2। जन्म लिए बच्चों को सुखदाई बना देते हैं। तो लवली बाप ठहरा ना। कितना लवली बाप है। जो तुम्हारे सभी दुःख 2। जन्मों लिए दूर कर देते हैं। हद का बाप तो सभी को होता ही है। सतयुग में 2। जन्मों का वरसा लिया हुआ है सभी का। सुख का वर मिल जाता है। वहां दुःख का नाम नहीं होता। अभी यह तो बुधि में याद रहना चाहिए। यहभूलना न चाहिए। कितना सहज है। सिर्फ मुरली पढ़कर सुनानी है। फिर भी कहते हैं ब्राहमणी चाहिए। ब्राहमणी बिगर धारणा नहीं होती। अरे सत्यना0 की कथा तो तुम जबानी ही याद कर लेते हो। यह तो बहुत ही सहज है। रोज2 समझाता हूं। इतने पत्थर बुधि हैं जो तुमकिसको समझा नहीं सकते हो। 3-4वर्ष पढ़ते हुए हुआ है फिर कहते रहते हो ब्राहमणी चाहिए। तुम अलफ को नहीं समझ सकते हो। इतने पत्थर बुधि हो। सिर्फ अलफ को याद करना है। उसमें ब्राहमण आकर क्या माथा मारेंगी। परन्तु बुधु फिर भी कहते ब्राहमणी चाहिए। ओम।